www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-4* *November 2024***

बिहार में महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण (2005–2025)

राहुल कुमार

शोधार्थी, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

सार

भारत की आधी आबादी महिलाएँ हैं और उनके बिना किसी भी समाज की प्रगति की कल्पना अधुरी है। बिहार जैसे राज्य में जहां ऐतिहासिक रूप से गरीबी, अशिक्षा और पितृसत्तात्मक संरचना गहरी जड़े जमाए हुए रही है, महिलाओं की आर्थिक स्थिति लंबे समय तक पिछड़ी रही। लेकिन वर्ष 2005 के बाद से बिहार के राजनीतिक इच्छाशक्ति, सरकारी योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों (Self Help Group-SHG) और सामाजिक जागरूकता ने महिलओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में उल्लेखनीय बदलाव किए। वर्ष 2005 से 2025 तक का समय इस संदर्भ में एक निर्णायक युग साबित हुआ है।

भूमिका

भारत जैसे देश के महिलाओं की स्थिति हमेशा से समाज और परिवार की रीढ़ रही है। महिलाएं न केवल घर संभालती है, बल्कि खेती, कामकाज और सामाजिक जीवन में भी बराबर योगदान देती है, लेकिन लंबे समय तक महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और आर्थिक अवसरों से वंचित रखा गया। बिहार, जो सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा राज्य माना जा रहा है, वहाँ महिलाओं की स्थिति और भी चुनौतिपूर्ण थी।

साल 2005 से लेकर 2025 तक का 20 वर्षों का समय बिहार की महिलाओं के लिए परिवर्तन और संघर्ष का दौर रहा है। इस अवधि के महिलाओं ने धीरे–धीरे घर की चारदीवारी से निकलकर शिक्षा राजनीति स्वरोजगार, उद्योग, सेवा क्षेत्र और डिजिटल प्लेटफार्म तक अपनी पहचान बनाई।

इस में हम विस्तार से समझेंगे कि 2005 से 2025 तक बिहार में महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण कैसे हुआ, किन योजनाओं और प्रयासों से इसे आगे बढ़ाया, कौन सी चुनौतियाँ सामने आई और भविष्य की संभावनाएं क्या है?

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- 2005 के पहले बिहार में महिलाओं की स्थिति कमजोर थी।
- साक्षरता दर 2001 की जणगणना के अनुसार बिहार की महिला साक्षरता दर केवल 33 प्रतिशत थी, जबकि पुरूष साक्षरता 60 प्रतिशत।
- रोजगार अर्थात् महिलाएं अधिकतर खेतों में मजदूरी या घरेलु कार्य तक सीमित थी। संगठित क्षेत्र में उनकी स्थिति बहुत कम थी।
- महिला श्रम–भागीदारी बहुत कम लगभग 12–14 प्रतिशत, जो राष्ट्रीय दर से बहुत कम थी।
- निर्णय लेने की क्षमता परिवार और समाज के महिलाओं की आर्थिक निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी बेहद कम थी। पंचायतो और स्थायी निकायों में महिलाओं की भागीदारी नगण्य थी।
- सामाजिक चुनौतियाँ जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, पितृसात्मक सोच और अशिक्षा के कारण महिलाएं पीछे थी। ऐसी स्थिति महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों को लगभग बंद कर देती थी।

यानि 2005 तक आर्थिक सशक्तिकरण की नींव कमजोर थी।

2. आरंभिक दौर (2005–2010)

- 2005 में नई सरकार के गठन के साथ ही महिलाओं के सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया गया था।
- 2005 में नीतीश कुमार सरकार आने के बाद महिलाओं के लिए विशेष योजनाएं शुरू हुई। पहली बार बडी संख्या में महिलाएँ नेतृत्वकारी भूमिकाओं में आई, जिससे आर्थिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ी।
- **प्रमुख पहले–**

1. पंचायती राज संस्थाओं में 50 प्रतिशत आरक्षण (2006)

- इसमें गाँव–गाँव की महिलाएं मुखिया, सरपंच और वार्ड सदस्य बनने लगी।
- पहली बार महिलाओं को पंचायत की योजनाओं और धनराशि पर सीधा अधिकार मिला।

2. मुख्यमंत्री साइकिल योजना (2006)

- लड़कियों को 9वीं कक्षा के दाखिला लेने पर साइकिल दी गई।
- इससे स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या तेजी से बढ़ी।
- आगे चलकर शिक्षा से रोजगार और आत्मनिर्भरता की राह खुली।

3. कन्या विवाह योजना और पोशाक योजना

- गरीब परिवाारों की बेटियों को प्रोत्साहन राशि दी गई।
- बाल विवाह रोकने और शिक्षा जारी रखने में मदद मिली।

4. स्वास्थ्य और पोषण योजनाएं

- आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्त्ता योजना में महिलाओं की नियुक्ति हुई।
- इसमें लाखों ग्रामीण महिलाए रोजगार से जुड़ी।
- इस दौर को महिलाओं के लिए नींव तैयार करने वाला समय कहा जा सकता है।

3. संक्रमण काल (2010–2015)

इस अवधि के महिलाओं का संगठित रूप सामने आया।

जीविका (JEEVIKA)– महिलाओं की शक्ति को बढ़ाने के लिए जीविका परियोजना के माध्यम से महिलाओं को संगठित किया गया, उन्हें लघु ऋण तथा बचत योजना से जोड़ा गया।

- 2006 में शुरू हुई बिहार ग्रामीण आजीविका परियोजना का असली विस्तार 2010 के बाद हुआ।
- महिलाओं को स्वयं सहायता समूह (SHG) में जोड़ा गया।
- वे छोटी बचत करने लगी और बैंकों से ऋण, सिलाई–कढ़ाई आदि छोटे रोजगार शुरू हुई। इससे महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, घरेलू निर्णयों मयें भूमिका और सामाजिक आत्मविश्वास में वृद्धि हुई।
- जनधन योजना 2014 में बड़ी संख्या में बैंक में महिलाओं के खाते खुले जिससे वित्तीय समावेशन हुआ।
- सरकारी नौकरियों में अवसरः शिक्षिका नियुक्ति आंगनवाड़ी सेवाओं और स्वास्थ्य क्षेत्र में महिलाओं की भर्ती बढ़ी। इस अवधि में महिलाओं को घर से बाहर निकलकर आर्थिक गतिविधियों के सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

प्रभाव

- महिलाओं ने पहली बार सामूहिक आर्थिक शक्ति का अनुभव किया।
- बैंकिंग प्रणाली से जुड़ने पर उनका आत्मविश्वास बढ़ा।
- गाँव में महिलाएँ छोटे व्यवसायी से परिवार की आय बढ़ाने लगी।

4. सशक्तिकरण की गति (2015–2020)

इस समय महिलाओं की आर्थिक पहचान और भी मजबूत हुई।

1. जीविका का विस्तार

- 2020 तक लगभग 1 करोड़ महिलाएँ जीविका समूहों से जुड़ चुकी थी।

- महिलाएं कृषि सखी, पशु सखी, बैंक मित्र जैसी भूमिकाएँ निभाने लगी।

2. कौशल विकास

- बिहार कौशल विकास मिशन (ठैक्ड) के तहत युवतियों को सिलाई सेंटर, ब्यूटी पार्लर, हेल्थ केयर और खुदरा क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया गया।

3. महिला उद्यमिता

- महिलाए को उद्योग खोलने लगी–पापड, अचार अगरबत्ती, सिलाई सेंटर, ब्यूटी पार्लर किराना दुकान।
- शहरी क्षेत्रों के महिलाएँ निजी स्कूल कोंचिग, बुटीक और रेस्टोरेंट भी चलाने लगीं।

4. डिजिटल पहुँच

- मोबाइल और बैंक खातों के कारण आर्थिक लेन–देन आसान हुआ।
- जनधन योजना और क्ठज् (प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण) से महिलाओं

यह समय महिलाओं के स्वालंबन और आत्मनिर्भर का रहा।

5. आधुनिक दौर (2020–2025)

यह कालखंड महिलाओं के लिए नए अवसरों और डिजिटल सशक्तिकरण का है।

1. कोविड–19 महामारी में योगदान

- जीविका दीदी नेटवर्क ने मास्क और सैनिटाइजर बनाए।
- राशन वितरण और सामुदायिक किचन चलाया।
- इससे उनकी सामाजिक भूमिका और सम्मान बढ़ा।

2.डिजिटल उद्यमिता

- महिलाएँ ैींजेंचचए थ्बमइववाए प्देजतंउ पर अपने प्रोडक्ट बेचने लगी।
- ऑनलाईन बुटीक, घरेलु समान हस्तशिल्प और खाद्य उत्पाद की बिक्री बढ़ी।

3. सरकारी योजनाएँ

- मुख्यमंत्री उद्यमी योजना और स्टार्टअप नीतियों के महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन दिया।
- कई महिलाओं ने 5–10 लोगों को रोजगार भी देना शुरू किया।

4. सेवा क्षेत्र में भागीदारी

- शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग पर्यटन और खुदार कारोबार में महिलाओं की संख्या बढ़ी।

2025 तक महिलाएँ केवल रोजगार पाने वाली ही नहीं बल्कि रोजगार देने वाली उद्यमी बन चुकी है।

6.आँकड़ा और डेटा

- 2005 में महिला साक्षरता दर : लगभग 33 प्रतिशत
- 2022 तक महिला साक्षरता दर : लगभग 61 प्रतिशत तथा 2025 तक 68 प्रतिशत अनुमानित।
- जीविका समूहों से जुड़ी महिलाएँ : 1.2 करोड़ +
- आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्त्ता : 7 लाख से अधिक
- ैभ्ळ की संख्या 2006 में कुछ हजार से बढ़कर 2025 तक 12 लाख से अधिक।
- 2025 तक अनुमानित महिला उद्यमियों की संख्या : 3 लाख से अधिक
- ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) में महिलाओं की भागीदारी 45 प्रतिशत तक पहुँची।
- माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लड़कियों का नामांकन दोगुना हुआ।

7. चुनौतियाँ–

हालाँकि बड़े प्रगति हुई है, लेकिन चुनौतियाँ अब भी मौजूद है :

1. ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के अवसर की असमानता।
2. श्रम शक्ति में भागीदारी राष्ट्रीय स्तर से कम।

3. तकनीकि प्रशिक्षण और पूंजी तक सीमित पहुँच।
4. पितृसत्तात्मक सोच और लैंगिक भेदभाव की मौजूदगी।
5. अधिकांश महिलाएं असंगठित क्षेत्र में कार्यरत जहाँ सुरक्षा और स्थायित्व की कमी है।
6. ग्रामीण इलाकों के अभी भी बाल विवाह और दहेज प्रथा जारी है।
7. कई महिलाएँ आर्थिक रूप से सक्रिय होने के बावजूद निर्णय लेने में स्वतंत्र नहीं है।
8. महिलाओं की सुरक्षा और गतिशीलता (डवइपसपजल) अब भी बड़ी समस्या है।
9. उच्च शिक्षा और तकनीक शिक्षा तक पहुँच सीमित है।
10. कई बार महिलाएँ केवल औपचारिक सदस्य बनकर रह जाती है, वास्तविक आर्थिक लाभ पुरूषों तक पहुँच जाता है।

8. भविष्य की संभावनाएँ–

यदि शिक्षा कौशल विकास और डिजिटल पहुँच पर लगातार निवेश होता रहा तो 2032 तक बिहार की महिलाएँ राज्य की आर्थिक वृद्धि में निर्णायक योगदान देंगी।ैभ्ळ मॉडल को और मजबूत करके उन्हें छोटे से मध्यम उद्यमों तक पहूँच दिलाना होगा। साथ ही सामाजिक मानसिकता में बदलाव और लैंगिक समानता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

- डिजिटल प्लेटफार्म पर महिलाओं की भागीदारी और बढ़ेगी।
- महिला स्टार्टअप और उद्योग बिहार अर्थव्यवस्था को नई दिशा देंगे।
- शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण के जरिए महिलाएँ राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकेगी।
- आने वाले समय में बिहार की महिलाएँ अर्थव्यवस्था की असली दूरी बन सकी।

9. निष्कर्ष–

बिहार में 2005 से 2025 का काल महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए ऐतिहासिक रहा है। यह यात्रा निर्भरता से आत्मनिर्भरता तक की कहानी है, जहाँ कभी महिलाएँ शिक्षा और रोजगार से वंचित थी, वही आज वे पंचायतों में नीति–निर्माता,ैभ्ळ की सदस्य स्वरोजगार करने वाली उद्यमी और डिजिटल युग की सहभागी बन चुकी है। 2005 से 2025 का सफर बिहार की महिलाओं के लिए संघर्ष, अवसर और सफलता का मिश्रण रहा है।

- शुरूआत में जहाँ महिलाएँ घर और खेत तक सीमित थी।
- वही आज वे शिक्षा, राजनीति, व्यापार, सेवा क्षेत्र और डिजिटल प्लेटफार्म पर सक्रिय भागीदारी कर रही है।
- सरकार की योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों और महिलाओं की अपनी मेहनत के मिलकर यह बदलाव संभव किया।

यह कहा जा सकता है कि यह 20 साल बिहार में महिलाओं के आर्थिक जागरण का काल रहे है–

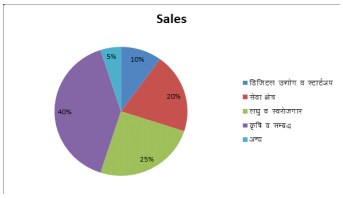

प्रमुख योजनाओं की सूची

योजना/कार्यक्रम	वर्ष	उद्देश्य
मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना	2007	शिक्षा के प्रोत्साहन
जीविका (SHG)	2006	आर्थिक आत्मनिर्भरता
कन्या उत्थान योजना	2018	जन्म से उच्च शिक्षा तक
मुख्यमंत्री उद्यमी योजना	2018	महिला उद्यमिता
नारी शक्ति अभियान	2016	सामाजिक जागरूकता
181 महिला हेल्पलाइन	2015	सहायता व सुरक्षा

समग्र प्रभाव (2005–2025)

क्षेत्र	2005 स्थिति (प्रतिशत में)	2025 स्थिति (प्रतिशत में)	सुधार (प्रतिशत में)
महिला साक्षरता दर	47	61	+14
महिला श्रम भागीदारी	6	17	+11
मातृ मृत्यु दर	312	118	-194
बाल विवाह दर	60	40	-20
पंचायत प्रतिनिधित्व	0–10	56	+46

बिहार के महिलाओं का आर्थिक सषक्तिकरण (2005–2025) जिलावार तुलनात्मक आँकड़े (रिपोर्ट आधारित)

जिला	2005 महिला श्रम भागीदारी दर %	2025 महिला श्रम भागीदारी दर %	2025 SHG (हजार)	2025 SHG (हजार)	2005 बैंक खाता (%)	2025 बैंक खाता (%)
पटना	8.5	18.2	25	310	12	89
गया	9.2	21.5	40	400	9	87
नालंदा	10.1	22.8	35	370	10	88
भोजपुर	7.5	19.2	28	320	8	85
मुजफ्फरपुर	8.8	20.4	32	350	11	90
दरभंगा	9.0	21.0	30	340	10	89
मधुबनी	8.2	20.2	27	330	9	87
समस्तीपुर	9.1	22.1	29	345	10	88
सारण	7.8	18.5	20	300	8	86
सीवान	8.0	19.0	22	280	7	85
चंपारण (पूर्वी)	9.5	21.8	36	390	11	88
चंपारण (पश्चिमी)	9.7	22.2	34	385	10	87
पुर्णिया	8.3	20.0	24	295	9	84
कटिहार	8.1	19.8	23	290	9	85
भागलपुर	9.6	21.9	31	360	12	90
औरंगाबाद	8.2	19.5	25	300	8	85
जहानाबाद	7.6	18.8	20	260	7	84
रोहतास	8.7	20.2	27	315	9	87

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रंथ

1. बिहार सरकार (2006–2025)– विभिन्न पंचायती राज शिक्षा, जीविका और महिला उद्यमिता के जुड़ी योजनाओं की आधिकारिक रिपोर्ट।
2. भारत सरकार, जनगणन 2001, 2011 एवं 2021 (प्रारंभिक रिपोर्ट)– महिला साक्षरता और रोजगार से जुड़े आंकड़े।
3. बिहार ग्रामीण आजीविका परियोजना (जीविका) रिपोर्टस (2007–2023)– विश्व बैंक और बिहार सरकार द्वारा जारी वार्षिक प्रगति रिपोर्ट।
4. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (छैक्ब्) और बिहार कौशल विकास मिशन (BSDM) रिपोर्टस।
5. नाबार्ड (NABARD) और ग्रामीण विकास मंत्रालय की रिपोर्टस (2005–2022)– महिला स्वयं सहायता समूह और ग्रामीण ऋण पर अध्ययन।
6. नीति आयोग (NITI AAYOG) इंडिया रिपोर्टस (2015–2023) महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सूचकांक पर आंकड़े।
7. यूनिसेफ और युएन वूमेन की रिपोर्ट– बाल विवाह, महिला शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर विशेष अध्ययन।
8. समाचार पत्र और पत्रिकाएँ (2005–2025)– दैनिक हिन्दुस्तान प्रभात खबर, दैनिक भास्कर आदि।
9. लोकसभा टी०बी०, राज्यसभा टी०बी०, दूरदर्शन।

10. ल्वनजनइम पर कुछ ज्ञानवर्धक चैनल से प्राप्त किए गए आंकडे।
11. बिहार आर्थिक सर्वेक्षण विभिन्न वर्ष 2005–2025.
12. नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस (NSSO)-Periodic Labour Force Survey (PLFS) विभिन्न वर्ष।
13. बैंकिंग डाटा (RBI SLBC Bihar Reports 2010-2024)

Cite this Article-

'राहुल कुमार', "बिहार में महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण (2005–2025)", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:11, November 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i40014

Published Date- 12 November 2024